VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

ABHYAAS MAINS

निबंध
ESSAY

*निर्धारित समय: **तीन** घंटे*
*Time Allowed: **Three** Hours*

टेस्ट कोड / Test Code : 2488

*अधिकतम अंक: **250***
*Maximum Marks: **250***

सामान्य अनुदेश

इस प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका में 32+2 पृष्ठ हैं। प्रश्न-पत्र, क्यू.सी.ए. पुस्तिका के अंत में संलग्न है, जो अलग (वियोज्य) किया जा सकता है और उम्मीदवार परीक्षा के उपरांत अपने साथ ले जा सकते हैं।

रफ कार्य के लिए तीन खाली पृष्ठ (पृष्ठ संख्या. 30-32) दिए गए हैं।

पुस्तिका प्राप्त होने पर, कृपया यह जांच कर लें कि इस क्यू.सी.ए. पुस्तिका में कोई कमी न हो, फटा हुआ पृष्ठ न हो अथवा कोई पृष्ठ गायब न हो इत्यादि। यदि ऐसा हो, तो इसके बदले नई क्यू.सी.ए. पुस्तिका प्राप्त कर लें।

General Instructions

This Question-cum-Answer (QCA) Booklet contains 33+2 pages. Question Paper in detachable form is available at the end of the QCA Booklet which can be taken away by the candidate after examination.

Three blank pages (Page Nos. 30–32) have been provided for rough work.

On receipt of the Booklet, please check that this QCA Booklet does not have any shortcomings, torn or missing pages etc. If so, get it replaced with a fresh QCA Booklet.

(उम्मीदवार द्वारा भरा जाएगा/To be filled by the Candidate)

पंजीकरण सं./Registration No. : 1165756

अभ्यर्थी का नाम/Name of Student : MOHAN M

माध्यम: हिंदी/अंग्रेजी
Medium: Hindi/English

HINDI

निबंध
ESSAY

तारीख
Date

25/08/23

केंद्र
Centre Tagore Nursing College, Mansarovar, Jaipur, Raj. 302020

निरीक्षक के हस्ताक्षर
Invigilator's Signature

VISIONIAS

	महत्वपूर्ण अनुदेश **उम्मीदवार को नीचे उल्लिखित निर्देश सावधानी से पढ़ लेने चाहिए। किसी भी निर्देश का उल्लंघन करने पर उम्मीदवार को मिलने वाले अंकों में कटौती, उम्मीदवारी रद्द, आयोग के परवर्ती परीक्षाओं के लिए वर्जित करने इत्यादि के रूप में दण्डित किया जा सकता है।**	**Important Instructions** **Candidate should read the undermentioned instructions carefully. Violation of any of the following instructions may entail penalty in the form of deduction of marks, cancellation of candidature, debarment from further Examination of the Commission etc.**
1	(क) अपना पंजीकरण सं. एवं अन्य विवरण केवल प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका (क्यू.सी.ए.) में उम्मीदवार के लिए निर्धारित स्थान पर ही लिखें। (ख) इस पुस्तिका में अन्यत्र कहीं भी अपना नाम, पंजीकरण सं., मोबाइल नं., पता अथवा प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका (क्यू.सी.ए.) संख्या न लिखें जिससे आपकी पहचान का खुलासा हो।	(a) Write your Registration Number and other details only in the space provided in the Question-Cum-Answer (QCA) Booklet for candidates. (b) Do not disclose your identity in any manner such as, by writing your Name, Registration number, Mobile number, Address, Question-Cum-Answer (QCA) Booklet No. etc. elsewhere in the Booklet
2	अपनी क्यू.सी.ए. पुस्तिका में कहीं भी प्रश्नों के वास्तविक उत्तर के अतिरिक्त कुछ न लिखें जैसे कि कोई कविता/दोहा, अभद्र या अपमानजनक अभिव्यक्ति इत्यादि और न ही कोई ऐसा चिन्ह/निशान बनाएं जिसका उत्तर से सम्बन्ध न हो।	Do not write in the QCA Booklet anything other than the actual answer such as couplet, obscene, abusive expression etc., nor put any sign/mark having no relevance to the answer.
3	परीक्षक को प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से कोई भी प्रार्थना/धमकी भरी बातें न लिखें।	Do not make any direct/indirect appeal/threat to the examiner.
4	उत्तर अस्पष्ट अथवा गंदी लिखावट में न लिखें। इस प्रकार के उत्तर का मूल्यांकन नहीं भी किया जा सकता है।	Do not write answers in bad/illegible handwriting. Such answers may not be evaluated.
5	उत्तर स्याही में ही लिखें। उत्तर लिखने के लिए पेंसिल का उपयोग न करें, हालांकि आरेख, चित्र इत्यादि बनाने के लिए पेंसिल का उपयोग किया जा सकता है।	Write answers in ink only. Do not use pencil for writing the answers. However, pencil may be used for drawing diagrams, sketches, etc.
6	प्रवेश पत्र में उल्लेख किए गए माध्यम के अलावा अन्य किसी माध्यम में उत्तर न लिखें। अधिकृत और अनधिकृत की मिली जुली भाषा का भी उपयोग न करें।	Do not write answers in medium other than the authorized medium in the Admission Certificate. Do not use mixed language either i.e. authorize and unauthorized media together for writing answers.
7	प्रश्नों के उत्तर ठीक उसके नीचे दिए गए निर्धारित स्थान पर ही लिखें। निर्धारित स्थान के अलावा किसी अन्य स्थान पर लिखे गए उत्तर का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।	Write answer at the specific space (right below the question) only. Answers written elsewhere at unspecified places in the booklet shall not be evaluated.
8	यदि आप अपने किसी उत्तर को रद्द करना चाहते हैं तो उसे पेन से काट दें तथा उस पर "रद्द" लिख दें, अन्यथा उसका मूल्यांकन किया जा सकता है।	If you wish to cancel any work, draw your pen through it and write "Cancelled" across it, otherwise it may be valued.

VISION IAS

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

ABHYAAS MAINS

निबंध

निर्धारित समय: तीन घंटे	**टेस्ट कोड : 2488**	अधिकतम अंक: 250

प्रश्न-पत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में **निबंध** लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएँगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिए।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ व पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिए।

ESSAY

Time Allowed : Three Hours	**Test Code : 2488**	Maximum Marks : 250

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

World limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

VISION IAS

EVALUATION INDICATORS

1. Contextual Competence
2. Content Competence
3. Language Competence
4. Introduction Competence
5. Structure - Presentation Competence
6. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

VISION IAS

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए Candidates must not write on this margin

खंड A और B प्रत्येक से **एक-एक** विषय चुनकर **दो** निबंध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000-1200 शब्दों में हो :

Write **two** essays, choosing **one** topic from each of the Sections A and B, in about 1000-1200 words each : 125 x 2 = 250

खण्ड – A / SECTION – A

1. टूटे हुए वयस्क की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान है।

It is easier to build strong children than to repair broken men.

2. कोरा तर्कपूर्ण मन उस चाकू के समान है जिसमें केवल फलक ही फलक है, वह प्रयोग करने वाले हाथों को ही लहूलुहान कर देता है।

A mind all logic is like a knife all blade, it makes the hand bleed that uses it.

3. जब कैटरपिलर को लगता है कि दुनिया खत्म हो गई, वह तितली बन जाता है।

Just when the caterpillar thought the world was over, it became a butterfly.

4. इतिहास, मनुष्य की स्मृतियों पर समय द्वारा लिखी गई एक चक्रीय कविता है।

History is a cyclic poem written by time upon the memories of man.

खण्ड – B / SECTION – B

5. बुद्धिमान व्यक्ति तुरंत वही करता है जो मूर्ख अंततः करता है।

The wise man does at once what the fool does finally.

6. दुनिया उन लोगों के लिए एक त्रासदी है जो महसूस करते हैं, लेकिन उन लोगों के लिए एक कॉमेडी है जो विचार करते हैं।

The world is a tragedy to those who feel, but a comedy to those who think.

7. पूर्ण स्पष्टता से बुद्धि को तो लाभ होगा लेकिन इच्छाशक्ति को क्षति पहुंचेगी।

Perfect clarity would profit the intellect but damage the will.

8. अपना चेहरा रोशनी की ओर रखिए और आपको कोई छाया दिखाई नहीं देगी।

Keep your face to the sunshine and you cannot see a shadow.

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

खण्ड – A / SECTION – A

1. टूटे हुए वयस्क की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान है।
It is easier to build strong children than to repair broken men.

2. कोरा तर्कपूर्ण मन उस चाकू के समान है जिसमें केवल फलक ही फलक है, वह प्रयोग करने वाले हाथों को ही लहूलुहान कर देता है।
A mind all logic is like a knife all blade, it makes the hand bleed that uses it.

3. जब कैटरपिलर को लगता है कि दुनिया खत्म हो गई, वह तितली बन जाता है।
Just when the caterpillar thought the world was over, it became a butterfly.

4. इतिहास, मनुष्य की स्मृतियों पर समय द्वारा लिखी गई एक चक्रीय कविता है।
History is a cyclic poem written by time upon the memories of man.

कोरा तर्कपूर्ण मन उस चाकू के समान है जिसमें केवल फलक ही फलक हैं, वह प्रयोग करने वाले हाथों को ही लहूलुहान कर देता है।

रामायण में रावण एक महान शिवभक्त और महाज्ञानी थे, चारों लोक में उनके सानी प्रकाण्ड विद्वान ही थी। अपने इस ज्ञान रूपी शस्त्र का प्रयोग उन्होंने देवताओं तक को बंधी बनाने में किया। परन्तु इस विद्वता में एक

चीज की कमी रही और उसी ने उन्हें श्री राम के हाथों काल का ग्रास बनाया, वह थी तर्कपूर्णता का अभाव। इसी कोरे ज्ञानी मन ने उन्हें अहंकार से भर दिया और नैतिक-अनैतिक, स्त्री सम्मान, पारिवारिक मूल्यों आदि से दूर करके एक असुर के रूप में पहचान दी।

इस प्रकार एक कोरे तर्कपूर्ण मन ने उस चाकू की तरह कार्य किया जिसने न केवल रावण बल्कि समूचे असुर जाति का संहार कर अपने हाथ ही लहूलुहान कर लिए।

अब सीधा सा प्रश्न हमारे मन में यही उठता है कि आखिर तर्कपूर्ण मन और तर्कहीन मन हैं क्या, यदि हैं तो इनकी पहचान कैसे हो, पहचान हो भी जाये तो इसके कारण क्या रहे कि एक मन तर्कहीन ही रह गया?

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

गौरतलब है कि कोरे तर्कहीन मन का तात्पर्य नैतिकता व मनुष्यत्व मूल्य का अभाव है जो एक परोपकारी व्यक्ति बनने में मदद करता है। यह गांधीजी के अनुसार साधन - साध्य की पवित्रता की बजाय अधिकतम हित से ही प्रेरित है। इसीलिए तो यह एक चाकू है जिससे उपयोगकर्ता स्वंय का ही हाथ लहुलुहान कर लेता है।

इसके कई उदाहरण हम इतिहास के पन्नों को पलटकर देख सकते हैं जहाँ ज्ञान की तर्कहीनता ने बुद्धि पर सवार होकर मनुष्य जाति का नरसंहार ही किया है। चाहे फिर वह मध्यकालीन रुढ़िवादी रोमन समाज हो, जिसने कोपरनिकस, ब्रूनो जैसे प्रबुद्ध - तर्किक वैज्ञानिकों की बातों को सिरे से खारिज कर मौत के घाट उतार दिया, यही बात जर्मन

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

नाज़ी समाज ने धारण की और समाज को लहुलुहान का भी कार्य किया।

ध्यातव्य है कि शिक्षा ज्ञान की प्रगतिशील खोज भी है लेकिन अधूरे - ज्ञान को ही पांडित्य मानकर जब 'थोथा चना बाजे घना' वाला तर्कहीन मन विज्ञान की सवारी करता है तो आतंकवाद, साइबर अपराध, हेट-फेक स्पीच व परमाणु बम जैसे प्रयोग ही सामने आते हैं। यह प्रयोग हाथ को लहुलुहान ही नहीं बल्कि मार तक देते हैं।

यह भी जानना महत्त्वपूर्ण है कि इस कोरे तर्कपूर्ण मन ने समाज को आज उस स्थिति में धकेल दिया है, जहाँ नारी केवल भोग वस्तु, SC-ST वर्ग अछूत और LGBTQ+ हेय बन गए हैं। आज

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

की पाश्चिमी ^तथाकथित तार्किक बुद्धि ने समाज से उन नैतिक मूल्यों को खत्म कर दिया है जिसकी बात बुद्ध 'आत्मदीपो भव' और गीता में श्री कृष्ण निष्काम कर्म के इस भाव में करते हैं -

"कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।"

यह बड़ी अचरज की बात है कि मन का कोरापन राजनीति को विद्रूप ही करता है परन्तु नैतिकता-विहीन कृत्य तो गांधी के सात-पापों से भी आगे निकल गये हैं। यह आज राजनीति के अपराधीकरण और वोट बैंक ही हित समूह हैं, के रूप में सामने आने लगा है। इन राजनीतिक व्यवहार ने न केवल समाज बल्कि सम्पूर्ण ताने-बाने के हाथ लहूलुहान कर दिए हैं।

प्राचीन काल से ही जिस पर्यावरण को हमारे पूर्वज पूजते आये हैं तथा इसे ईश्वर का रूप मानते हैं, को आज जिस प्रकार विकास के कोरे

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

तर्कपूर्ण मन ने ढंगा दिखाया है, वह जंगली जीव-जन्तुओं, समुद्री कोरल-मैंग्रोव-मछली व तटीय क्षेत्रों में रहने वाले गरीब-द्वीपीय देशों के हाथ खून से लहूलुहान भी कर रहा है। आज गांधी के 'आवश्यकतानुसार प्रकृति प्रयोग' की बजाय 'अत्यधिक उपभोग अनुसार प्रकृति प्रयोग' के नारे ने ही जलवायु परिवर्तन जैसी समस्या खड़ी कर दी है। कई देश हीट डोम बन गये हैं तो कई समुद्र लहरों में डूब रहे हैं।

यह बात अत्यन्त हस्यास्पद है कि जिस प्रशासनिक भ्रष्टाचार का मजाक कवि अंग्रेजों के जमाने में उड़ा रहे थे - "बड़ा हाकिम रोज जो खाता, सब पर दूना रिश्वत लगाता।" वही आज हमारे देश की आधारभूत समस्या बन गई है। तर्कपूर्णता के कोरे मन को जब धन की खुशबू आती है तो न तो कांट का कर्तव्य, कर्तव्य के लिए याद आता है और न

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

ही संविधान का कर्तव्य। बल्कि अधिकाधिक समेटकर अपने हाथ भरकर गरीबों के हाथ लहूलुहान करने का ही विचार हावी रहता है। तभी तो 'करप्शन परसेप्सन इंडेक्स' हो या द्वितीय प्रशासनिक आयोग रिपोर्ट, सभी भ्रष्टाचार की बढ़ती प्रवृत्ति की ओर ही इशारा कर रहे हैं।

उपरोक्त बातों के साथ ही यह भी जान लेना आवश्यक है कि कठोर मेहनत और लगन से जो चिकित्सक ईश्वर-रूपी मनुष्य कहलाते हैं, वह जब कोरे तर्कपूर्ण मन का शिकार होते हैं तो न केवल चिकित्सीय नीतिशास्त्र भूल जाते हैं बल्कि मानव-अंगों को व्यापार समझकर अपने हाथ लहूलुहान कर लेते हैं।

आज सम्पूर्ण विश्व जिस ज्ञान-विज्ञान की तरक्की पर खींसे निपोर रहा है, वह शायद वर्स-फुटेन युद्ध में मानवीय संकट और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, डीपफेक तकनीकी की भयावहता

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

के प्रति कोरा तर्कपूर्ण मन ही लिए हुए है। विनाश के बम आज पृथ्वी ही नहीं बल्कि स्पेस तक में पहुँच चुके हैं तो AR/VR ने आभासी दुनिया बनाकर मशीनी मानव का निर्माण कर दिया है। इन सबके जो परिणाम हम देख रहे हैं, वह तो अभी हमारे हाथ लहूलुहान भी नहीं बल्कि विनाश ही करेंगे।

इस प्रकार कोरे तर्कपूर्णता आधारित मन को आज नैतिकता की परिधी में लाने की जरूरत है। आज हमें अरस्तु के 'सम्मन बोनम' आधारित लोक कल्याण और गांधीजी के सत्याग्रह आधारित आचरण की महती आवश्यकता है।

गौरतलब है कि कोरा तर्कपूर्ण मन बनने का मुख्य कारण अति-भौतिकता और अधिकाधिक प्राप्त करने की असीमित मानवीय इच्छा है। थॉमस

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

हॉब्स इसी मनोवैज्ञानिक स्वार्थवाद की बात करते हुए इसे संयमित करने की राह सुझाते हैं।

इस स्वार्थपरता और केवल स्वंय का विकास ही पृथ्वी का विनाश वाली पाश्चिमी सोच को आज भारतीय परोपकारिता से सीखने की जरूरत है जो यह घोषणा करती है -

"परोपकाराय पुण्याय, पापाय परपीड़नम।"

आज हमें कानून - नियम आधारित उस व्यवस्था की जरूरत है जो अन्त्योदय की बात करता हो। विज्ञान का तर्कहीन चाहू सर्वसहमति आधारित बुद्धि द्वारा चालित हो और जवाबदेही विश्व - व्यवस्था की स्थापना हो।

ग्रेटा थनबर्ग, सुंदरलाल बहुगुणा बाबा आम्टे जैसे पर्यावरणविदियों की जरूरत है तो पेड़ों को उपभोग से ज्यादा उपयोगी मानकर जलवायु न्याय की बात करते हैं। समाज में

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

महिलाओं के प्रति नज़रिया और नज़र दोनों परिवर्तन हेतु आर्थिक सशक्तिकरण मुख्य टूल है (सिमोन द बोउवा)।

राजनीति - प्रशासन में चुनावी सुधार व सिविल सेवा आचरण नियमों में सुधार और विनियमन तर्कहीन मन से तार्किक बुद्धि युक्त मानवीयता की ओर लेकर जायेगा।

समग्रत: यही कहकर बात समाप्त करना चाहूंगा कि तार्किकता - अतार्किकता में एक पतली लाइन का अन्तर है, यह हमारे व्यवहार व सामाजिक - आर्थिक व्यवस्थाओं की जिम्मेदारी है कि इसे किस तरफ मोड़ते हैं। यदि कोरा तर्कपूर्ण मन वाली भविष्य पीढ़ी बनी तो वह दिन भी दूर नहीं जब हम सबके हाथ खून से लहुलुहान ही होंगे।

— × — × —

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

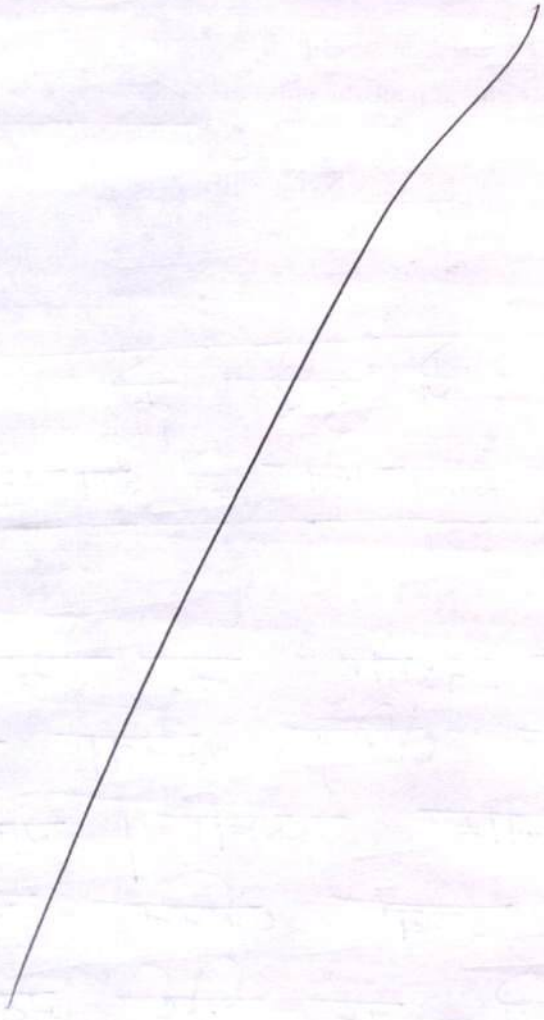

खण्ड – B / SECTION – B

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

5. बुद्धिमान व्यक्ति तुरंत वही करता है जो मूर्ख अंततः करता है।
The wise man does at once what the fool does finally.

6. दुनिया उन लोगों के लिए एक त्रासदी है जो महसूस करते हैं, लेकिन उन लोगों के लिए एक कॉमेडी है जो विचार करते हैं।
The world is a tragedy to those who feel, but a comedy to those who think.

7. पूर्ण स्पष्टता से बुद्धि को तो लाभ होगा लेकिन इच्छाशक्ति को क्षति पहुंचेगी।
Perfect clarity would profit the intellect but damage the will.

8. अपना चेहरा रोशनी की ओर रखिए और आपको कोई छाया दिखाई नहीं देगी।
Keep your face to the sunshine and you cannot see a shadow.

पूर्ण स्पष्टता से बुद्धि को तो लाभ होगा लेकिन इच्छाशक्ति को क्षति पहुँचेगी।

भरे दरबार का एक दृश्य, गमगीन माहौल लेकिन जनता द्वारा उपहास व मजाक उड़ाना। राजा द्वारा अंतिम इच्छा पूर्ति से पूंछी गई तो वह सिर्फ जहर का प्याला हाथ में लेकर हँसता हुआ पी जाता है और मृत्यु को प्राप्त होता है। यह कहानी प्राचीन ग्रीक दार्शनिक सुकरात की

मृत्यु की है, जहाँ अपने दर्शन के प्रति पूर्ण स्पष्टता ने उन्हें दृढ़-निश्चयी होने की बुद्धि प्रदान की लेकिन बदले में मौत भी प्रदान की।

परन्तु उपरोक्त घटना में सुकरात की पूर्ण स्पष्टता ने ही अनादिकाल काल से राजनीति के उन सिद्धान्तों को पाला-पोसा और हमें प्रदान किया - लोकतंत्र। इस प्रकार सही ही कहा गया है - वैचारिक पूर्ण स्पष्टता बुद्धि को द्वन्द्वों से बचाकर लाभ पहुँचाती है लेकिन यह इस स्पष्टता से आने वाले संकटें में हमारी इच्छाशक्ति की परीक्षा भी लेती है।

गौरतलब है कि विचारों में स्पष्टता किसी लक्ष्यापूर्ति हेतु सबसे महत्त्वपूर्ण कारक है। यह स्पष्टता

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

ही हमें इन द्वन्द्व संकटों से बचायेगी जो लक्ष्य-यात्रा में सड़क के रोड़े के रूप में आते रहेंगे। इसी वैचारिक बुद्धि स्पष्टता के कारण ही मध्यमा बुद्ध और भगवान महावीर कठोर परिश्रम हेतु खुद को तैयार करते हैं। इसमें उनकी इच्छाशक्ति की नित-नयी परीक्षाएं होती है और क्षति भी पहुँचती है लेकिन कहते है ना - ठान लिया तो, हो ही जाता है।

ध्यातव्य है कि यह वैचारिक बुद्धि स्पष्टता केवल ढींगे-हाँकने और मन ही मन रोज सोचने से नहीं आती बल्कि इस हेतु एक प्रबल आंतरिक उत्प्रेरक की आवश्यकता होती है। यह वही उत्प्रेरक है जिसने दशरथ मांझी को पहाड़ काटकर रास्ता बनाने की स्पष्टता व दृढ़ता प्रदान की। तभी तो पहाड़ की तरह एक शारीरिक रूप से कमजोर इंसान भी हँसकर कह देता है - जब तक

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

तोड़ेगा नहीं, तबतक छोड़ेगा नहीं।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

यह समस्याओं को तोड़कर हल निकालने वाली स्पष्टता ने ही भारतीय स्वाधीनता नायकों की इच्छाशक्ति की परीक्षा ली। चाहे फिर गांधी का सत्याग्रह रूप में हिंसा को सहन करना हो, या फिर भगत, चंद्रशेखर, बोस, गंगाधर तिलक की विद्रोह द्वारा आजादी प्राप्ति की वैचारिक स्पष्टता।

बात जानने योग्य है कि मध्यकालीन रूढ़िवादी समाज, महिला यौन शोषण, जातिवादी भावनाओं व धार्मिक आडंबरों में इस कदर डूबा हुआ था कि विरोध करने वाले स्वर या तो दबा दिए जाते या फिर मौत के घाट उतार दिए जाते। परन्तु इसी काल में कुरीतियों के प्रति स्पष्ट विद्रोह करने वाले संत कबीर भी हुए जो न तो समाज-निकाला से भयभीत होते हैं और न ही किसी के तंज से।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

कबीर की समाज-समता की
इसी ~~समता~~ स्पष्टता ने उन्हें यह
बोलने की इच्छाशक्ति प्रदान की-

काकर पाथर जोरि के मस्जिद
लइ बनाय
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे
क्या बहरा हुआ खुदाय।

इसी प्रकार की समाज सुधार
की दृढ़-इच्छाशक्ति 19 वीं सदी में
राजा राममोहन रॉय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर,
~~स्वी~~ स्वामी विवेकानंद, केशवचन्द्र सेन, ज्योतिबा
फुले जैसे महानुभावों ने पाली और
अन्याय के प्रति न्याय की वैचारिक
स्पष्टता का मार्ग प्रशस्त किया।

गौरतलब है कि विचार-
बुद्धि स्पष्टता हमें नैतिक हल्कों से
बचाती है तथा सामाजिक-आर्थिक व
मनोवैज्ञानिक प्रगति हेतु भी एक
इच्छाशक्ति प्रदान करती है। लाल
बहादुर शास्त्री, अब्राहम लिंकन, अशोक
महान और अकबर की इन्हीं सत्य
के साथ बने रहने और लोककल्याणकारी

वैचारिकता ने उन्हें सफल राजनीतिज्ञ बनाया।

यहाँ यह भी जान लेना आवश्यक है कि इस सच्चा प्रभाव में हमें मार्ग तो प्राप्त हो जाता है परन्तु इस काँटेरूपी मार्ग की समस्याएं हमारी इच्छाशक्ति को क्षति पहुँचाकर कमजोर करने का प्रयास करती जरूर हैं। जैसे हाल ही में चन्द्रयान-III की सफलता ने ISRO की चांद पर उतरने की सफलता को दिखाया, साथ ही पिछले मिशन की असफलता ने इच्छाशक्ति के समक्ष कंटक की तरह कार्य किया।

यही बात प्रशासनिक नीतिशास्त्र में आज हम आये दिन देख रहे हैं जहाँ भ्रष्टाचार के प्रति जीरो टॉलरेंस वाली स्पष्ट बुद्धि की इच्छाशक्ति को कई रूपों में क्षति का ही सामना करना पड़ता है। अशोक खेमका, सत्येन्द्र दुबे जैसे प्रशासकों की

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

स्पष्ट बुद्धि जब निरंतर ह्रासकर और हत्या की धमकियाँ सुनती है तो इच्छाशक्ति को थोड़ी सांत्व और कष्ट उठाने ही पड़ते हैं।

अब यह प्रश्न स्वाभाविक ही उठता है कि बुद्धि की पूर्ण स्पष्टता क्यों एक विरल यथार्थ है जो बेहद कम लोगों में दिखता है? इसका सीधा-सा कारण अंतरात्मा का संकट है, जहाँ स्वहित और परहित के बीच युद्ध हमारी स्पष्टता-इच्छाशक्ति को धुंधला ही करता पाया जाता है। अतिभौतिकता, भ्रष्टाचार, युवाओं में मेहनत की बजाय केवल घर-बैठे सफलता की चाह और सामाजिक-आर्थिक विद्रूपताओं ने हमें इच्छाशक्ति रहित ही किया है।

इसी का कारण आज वैश्विक आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन व वित्तीयकरण के प्रति विकसित देशों की अस्पष्टता, विज्ञान को विनाश का साधन रूप में प्रयोग और घटते नैतिक मूल्य का

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

जाल इतना गहरा है कि पूर्ण स्पष्ट बुद्धि वाली इच्छाशक्ति दूर का स्वप्न ही लगती है।

आज हम भगवान श्रीराम की सत्य-धर्म, गांधीजी की अहिंसावादी, अंबेडकर जी की सामाजिक समता और लोहिया जी के मेरे सपनों का भारत वाली बुद्धि स्पष्टता का ही अभाव स्पष्ट रूप में अनुभव कर रहे हैं।

'Suffer for the Integrity' वाले डॉ. अब्दुल कलाम के वाक्य आज सैद्धान्तिक ही ज्यादा पढ़े और पसन्द किए जाते हैं। स्पष्टता आज सकारात्मक नैतिक दृष्टिकोणों की बजाय स्वयं के लाभ के प्रति अधिक है।

इसी वैचारिक अस्पष्टता के प्रति आज एक नीतिशास्त्रीय नियोजन और सामाजिक-शैक्षिक उत्थान की जरूरत है। जो बेहतर व नैतिक मूल्यों के प्रति कठिन से कठिन दर्द सहने

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

हेतु तैयार रहे।

आज के बच्चे कल का भविष्य है और इसी भविष्य को वृद्धि की सकारात्मक स्वच्छता की जरूरत है। अपने कृत्यों के प्रति जवाबदेही व सजा हेतु हमेशा तैयार रहने वाली मानसिकता ही उस पूर्ण स्वच्छता का विकास करेगी जो किसी द्वन्द्व में फँसकर बहने नहीं बल्कि इच्छाशक्ति की दृढ़ता के साथ यथार्थ का सामना करने हेतु मानव बुद्धि का नेतृत्व करेगी।

इस हेतु आज नई शिक्षा नीति - 2020 व मानव समाज में नैतिकता के भारतीय प्राचीन इतिहास को पुनः खोजने की जरूरत है। यह कार्य माता - पिता - शिक्षक और सिविल समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है जो एक पूर्ण स्वच्छता वाले बुद्धिशील व्यक्ति का निर्माण करे। जो कैप्टन विक्रम बत्रा जैसा व्यक्तित्व प्रदान कर कहे - ये दिल मांगे और मोर।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

SPACE FOR ROUGH WORK

पूर्ण स्पष्टता से बुद्धि को
लाभ → इच्छाशक्ति को प्राप्ति

↳ सुकरात, कबीर, मांझी, गांधी, भगत, बोस, चन्द्रशेखर
↳ समाज - सुधार कबीर - दोहा
मीरा
↓ RRR, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर
↳ अंबेडकर
↳ ISRO - चन्द्रयान 3
↳ कारगिल युद्ध - विक्रम बत्रा
↳ प्रशासन - अशोक खेमका
सत्येन्द्र दुबे
↳ महिला - रोजा पार्क्स,
नस्लवाद - मार्टिन लूथर किंग जूनि.
↳ अब्राहम लिंकन (असफलता से जान गई)

पूर्ण स्पष्टता के लाभ
सफलता प्राप्ति, तार्किकता, निर्णय क्षमता मजबूत, तीव्रता, समाज भलाई

नकारात्मक
लादेन, आतंकी
ड्रग लोग

असफलता कब - कब → नैतिकता का संकट
↳ अक्षम - अलग समझाये

पार कैसे पाएँ
↳ लचीला

Intro
↓
कोरा तर्कपूर्ण
मन क्या, क्यों
↓
~~सेत्र आधारित उदा. / quotation बुद्ध आदि~~
↓
अतः तर्कपूर्ण
मन हेतु
जरूरत ⇒
प्राप्त करें

SPACE FOR ROUGH WORK

कोरा तर्कपूर्ण मन चाकू के समान

(महाभारत का युद्ध तो सब को पता ही है। कौरव और पांडव में तर्कपूर्णता की कमी नहीं थी लेकिन)

9/11

⇒ रामायण हमारे जीवन का ही हिस्सा है। तर्कपूर्णता और कोरे ज्ञान-घमंड का जो तांडव हमें यहाँ देखने को मिलता है वह अन्यत्र दुर्लभ है। रावण जो यह

रामायण में रावण जो एक महापंडित-महाज्ञानी और शिव के भक्त थे, में ~~व्यावहा~~ सैद्धान्तिक रूप में कोई कमी नहीं थी लेकिन कहते हैं ना तार्किकता दोधारी तलवार है,

रामायण में रावण महापंडित-महाज्ञानी थे, चारों लोक में उनके जैसा ज्ञान ~~प्रबुद्ध~~ ~~क~~ किसी के पास नहीं था। अपने ~~अन्य~~ अनन्य परिश्रम से उन्होंने यह

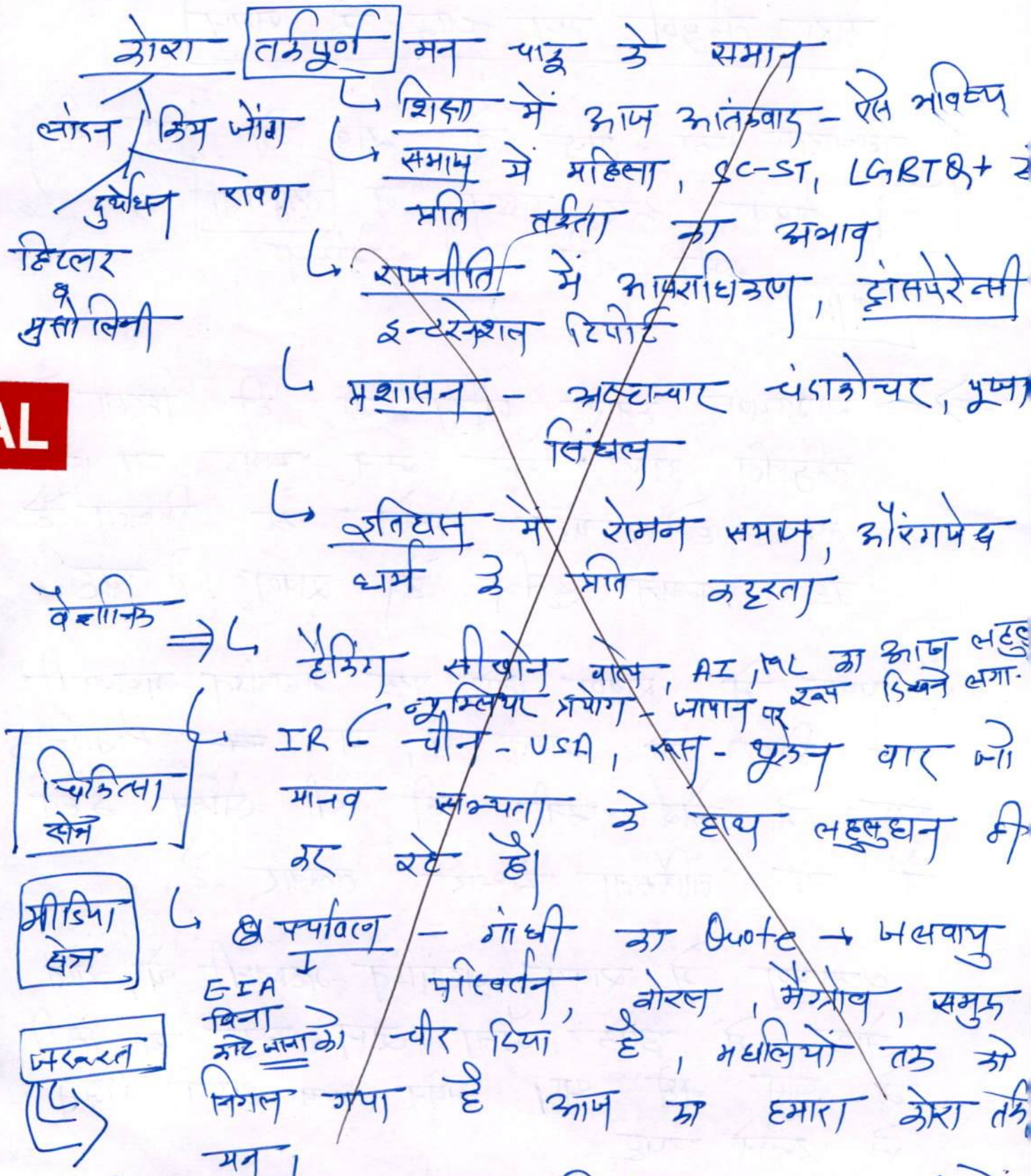

SPACE FOR ROUGH WORK

कोरा तर्कपूर्ण मन चाकू के समान
सोक्रेटीज / किम जोंग
दुर्योधन रावण
हिटलर
मुसोलिनी

↳ शिक्षा में आज आतंकवाद - ऐसे भविष्य
↳ समाज में महिला, SC-ST, LGBTQ+ के प्रति दर्दता का अभाव
↳ राजनीति में अपराधीकरण, ट्रांसपेरेन्सी इन्टरनेशनल रिपोर्ट
↳ प्रशासन - भ्रष्टाचार, चंपारण, पूजा सिंघल
↳ इतिहास में रोमन समाज, औरंगजेब धर्म के प्रति कट्टरता

वैज्ञानिक ⇒ ↳ हैकिंग, क्लोन वाले, AI, ML का आज लहू दिखने लगा।
↳ IR - न्यूक्लियर प्रयोग - जापान पर, चीन - USA, रूस - यूक्रेन वार जो मानव सभ्यता के हाथ लहूलुहान भी कर रहे हैं।

चिकित्सा क्षेत्र

मीडिया क्षेत्र

↳ पर्यावरण - गांधी का Quote → जलवायु परिवर्तन, कोरल, मैंग्रोव, समुद्र
EIA बिना कट जाना को चीर दिया है, मछलियों तक को निगल गया है आज का हमारा कोरा तर्क मन

ज़रूरत

↳ व्यक्तिगत - समाज → पाश्चात्यीकरण ने संयुक्त परिवारों व मूल्यों को खत्म कर समाज के हाथों को लहूलुहान ही करके रख दिया है।